खुशियों की परी

(पुस्तक के कुछ अंश)

"मीता, मेरी बात तो सुनो। इस तरह का पागलपन मत करो। मैंने तुमसे कहा न... मैं सब ठीक कर दूंगा।"

"नहीं मुकेश, मैं अब जीना नहीं चाहती। मुझे मर जाने दो। तुम्हारे सपने को पूरा करना ही मेरा सपना था। पर अब... अब मैं इस लायक ही नहीं रही। मुझे मर जाने दो मुकेश... मुझे मर जाने दो।"

कहते हुए मीता मुकेश से लिपट कर रोने लगी। उसके आंसुओं की बूंद मुकेश के कंधे भिगो रही थी। मुकेश की आंखों में भी आंसूं थे। पर वो भी बेबस था। इतने में नर्स आ गई। मीता, आपके इंजेक्शन का टाइम हो गया है। मुकेश आप प्लीज बाहर जाइए। इतना कहकर नर्स इंजेक्शन तैयार करने लगी। आगे............

"मीता, मेरी बात तो सुनो। इस तरह का पागलपन मत करो। मैंने तुमसे कहा न... मैं सब ठीक कर दूंगा।"

"नहीं मुकेश, मैं अब जीना नहीं चाहती। मुझे मर जाने दो। तुम्हारे सपने को पूरा करना ही मेरा सपना था। पर अब... अब मैं इस लायक ही नहीं रही। मुझे मर जाने दो मुकेश... मुझे मर जाने दो।"

कहते हुए मीता मुकेश से लिपट कर रोने लगी। उसके आंसुओं की बूंद मुकेश के कंधे भिगो रही थी। मुकेश की आंखों में भी आंसू थे। पर वो भी बेबस था। इतने में नर्स आ गई। मीता, आपके इंजेक्शन का टाइम हो गया है। मुकेश आप प्लीज बाहर जाइए। इतना कहकर नर्स इंजेक्शन तैयार करने लगी।

मुकेश ने मीता के माथे को चूमा और दवा का पर्चा लिए केमिस्ट की दुकान पर पहुंच गया। वहां उसकी नजर एक अखबार की खबर पर पड़ी। उसने खबर पढ़ी और अखबार लेकर अस्पताल की ओर चल पड़ा। तीन दिन बाद मीता को अस्पताल से छुट्टी दे दी गई। दोनों की शादी को दो साल बीत चुके थे। संतान की चाहत में मीता दिन रात ईश्वर से प्रार्थना करती रहती पर भगवान को शायद कुछ और ही मंजूर था। उसके यूट्रेस में कैंसर होने की जानकारी होने के बाद भी मुकेश ने उससे ये बात छिपाई, उसे पता था कि ये सब जानकर मीता टूट जाएगी इसलिए वो उसका इलाज करवाता रहा, लेकिन फायदा नहीं हुआ। आखिरकार मीता की सर्जरी कर उसके यूट्रेस को बाहर करना ही पड़ा। मीता को जब ये बात पता चली तो उसे लगा कि अब उसके जीवन जीने का मकसद ही खत्म हो गया। उसे पता था कि मुकेश को बच्चे कितने पसंद हैं। पर शायद ईश्वर कभी-कभी उस सपने को भी छीन लेता है जो हमारे जीने का जरिया होते हैं।

"मीता, चलो जल्दी से खाना खा लो। फिर तुम्हें दवा भी तो खानी है...।" मुकेश ने मीता का सिर सहलाते हुए उसे प्यार से मनाया।

"नहीं, मेरा मन नहीं। आप खा लीजिए मुकेश। मैं नहीं खा पाऊंगी।" इतना कहकर उसकी पलकें फिर गीली हो गईं।

मुकेश अपने आंसुओं को रोकने की कोशिश करते हुए बोला, अब जिद मत करो वर्ना मैं नाराज हो जाऊंगा। कहकर उसने खाने का कौर उसकी ओर बढ़ा दिया। एक मासूम बच्चे की तरह नीचे देखते हुए मीता ने खाना खाया।

ऑफिस जाते हुए रास्ते में मुकेश को उस खबर की याद आई। उसने गाड़ी उस संस्थान की ओर घुमा दी। ठीक 15 दिन बात मीता का जन्मदिन था।

"देखो मीता, मैं तुम्हारे लिए क्या लाया हूं।"

गुलाबी रंग के तौलिए में लिपटी 15 दिन की बच्ची को लेकर मुकेश मीता के करीब पहुंचा।

"ये...। ये बच्ची?" मीता ने सवालिया निगाह से उसे देखते हुए कहा।

"ये बच्ची... यही अब हमारा सपना है। हां मीता... ये हमारी अपनी बेटी है। तुम्हारा और मेरा सपना। मितिशा। जन्मदिन मुबारक हो।" कहते हुए मुकेश ने मीता को बाहों में भर लिया।

मीता की आंखों में खुशी के आंसूं आ गए। उसने मितिशा को चूमकर अपने गले से लगा लिया।